कुरान में गैर मुस्लिमों को जीने का हक नहीं

धरती पर जब इस्लाम आया, तो इस्लाम के प्रवर्त्तक ने समूचें धरती पर इसे फैलाने के लिए जो योजना बनाई थी, वह दो, दस या दौ सौ, पांच सौ वर्ष के लिए नहीं, अपितु धरती पर जब तक इस्लाम को रहना है, उस समय तक के लिए है। अब अनायास ही लोग जानना चाहेंगे कि आखिर वह योजना क्या है? इस्लाम का आधार कुरान है, जिसे लोग होली कुरान या पवित्र कुरान कह रहे हैं, इस कुरान को लोग पढ़े बिना, जाने बिना, समझे बिना ही धर्म ग्रन्थ कह रहे हैं, मान रहे हैं। कुछ लोग तो यहां तक तर्क देते हैं कि कुरान में यह सभी बातों का होना सम्भव नहीं, यह तो कुरान का गलत अनुवाद किया जा रहा है आदि।

यह तो आज की बुद्धिजीवी तवलीन सिंह जैसी महिला, पत्रिका के माध्यम से कह रही है, जो कुरान का 'क' व अरबी का 'अ' नहीं जानतीं। मैं प्रार्थना करता हूं कि मेरे साथ बैठे फिर मैं बताऊंगा कि कुरान क्या है? क्योंकि मैंने 18 वर्ष तक इसी कुरान और हदीसों की पढ़ाई की है। मात्र नमुने के तौर पर कुछ प्रमाण दे रहा हूं, कुरान में क्या है?

कुरान में अल्लाह मात्र मुसलमान, इस्लाम व ईमानदारों का है, इसके अतिरिक्त कुरान का अल्लाह सबको काफिर, वेदीन मानता है और इन काफिरों को या वेदीनों को समूल नष्ट कर या समाप्त कर उसके स्थान पर कुरानी दैवीय व्यवस्था या सम्पूर्ण इस्लामिक राज्य व्यवस्था कायम करना है। यहां तक कि इस इस्लाम को फैलाने में या कुरान को फैलाने में प्राण भी गंवाना पड़े, अल्लाह उसे सबसे बड़ा इनाम देंगे और अपने निकट में जन्नतूल फिरदौस में उसे प्रवेश करायेंगे जो अल्लाह के नजदीक सबसे ज्यादा सम्मान का पात्र है।

प्रमाण 1 – इन्नदीन इदाल्लाहिल इस्लाम-सुराइमरान-आ० 19 देखें।

कुरान – 1: إن الدين عند الله الإسلام ١٩ : عمران ١٩

अर्थ – निसन्देह अल्लाह का धर्म दीन इस्लाम है।

प्रमाण 2 – व मई यब तगे गैरल इस्लाम दीन्न = सुरा इमरान - आ० 85

कुरान – 2: ومن يبتغ غير الإسلام دينا : عمران - ٨٥

अर्थ – इस्लाम को छोड़कर दूसरा कोई धर्म नहीं।

प्रमाण 3 – अल इस्लामूहककुनवलकुफरू बातेलून –

कुरान – 3: الإسلام حق والكفر باطل

अर्थ – एक इस्लाम ही हक है और सब कुफ्र हैं, सबको बातिल किया।

इसी इस्लाम को मानने वालों से अन्य सम्प्रदाय वालों को समाप्त करने की प्रेरणा (कत्ल की प्रेरणा)।

प्रमाण 1 – या अईयोहन्नवीयो हर रजिल मोमेनीना अलूल किताले इंय्याकुम मिनकूम = सुरा-अनफाल-आ० 65

,कुरान – 1: يا أيها النبي حرض المؤمنين على القتال إن يكن منكم : انفال

अर्थ – ऐ नबी मोमिनों से कहो काफिरों की कत्ल करे, युद्ध के लिए तैयार रहें और धैर्य से काम लें बीस मुसलमान दो सौ काफिरों पर भारी पड़ेंगे क्योंकि बीस अल्लाह वाले है।

प्रमाण 2 – फइजन सलाखाल अश हरूल हरामू फक तूलु मुशरेकीना हयसू वजद् तुमू हुम व खूजू हुम वह सुरू हुम वकयुदू ल हुम कुल्ला मरसादिन फ इन ताबू व आका मुस्सालाता व आ तुज्जाकाता फखलू सबी लहूम इन्नाल्लाहा गफू रूर रहीम, सुरा = तौबा – आ० 5

कुरान – 2: فاذا انسلخ الاشهر الحرم فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم وخذوهم واحصروهم واقعدوا لهم كل مرصد فان تابوا واقاموا الصلوة واتوا الزكوة فخلوا سبيلهم ان الله غفور رحيم ٥ التوبة ٥

अर्थ – और निषिद्ध महिना खतम होने पर काफिरों को जहां पाव कत्ल करो उन्हें बन्दी बना लो और रोक दो उनका रास्ता, जगह-जगह पर ताक पर रहो उनको यातना दे-दे कर मारो, जब तक वह मुसलमान बनने का पश्चाताप न करें और अगर तौबा कर ले नमाज़ पढ़े, जकात दे, फिर उसे अल्लाह के रास्ते में छोड़ो, अल्लाह रहम करने वाला दयालु है।

यही वह आयत है जिस पर ओसामा बिन लादेन या इस्लामी आतंक अफगानिस्तान पर बमबारी करने से रमजान महिना में न लड़ने की बात कही गई थी। ओसामा बिन लादेन व सभी आतंकवादियों ने मिलकर कहा था हम अल्लाह के फौज हैं।

प्रमाण 3 – कातेलू हुम यू अज् जिबा हुमुल्लाहोबी अईदी कुम व यूख जी हिम व यन सुरूकुम अलई हिम व यश फी सूदुरा कौमिम मौमेनीन = सूरा, तौबा – आ० 14

कुरान – 3: قاتلوهم يعذبهم الله بايديكم ويخزهم وينصركم عليهم ويشف صدور قوم مؤمنين

अर्थ – तुम लोग उनके साथ लड़ाई करो अल्लाह तुम लोगों के (अर्थात् मुसलमानों के) हाथों से उन्हें सजा दिलाना चाहते है, और उन्हें लांछित करना चाहते है, उनके खिलाफ तुम्हें जीत दिलाना चाहते है, क्योंकि अल्लाह मोमिनों के साथ हैं।

बहन तवलीन सिंह जी, अब बतायें, कि कुरान के इन आयतों के रहते, किसी और कौम के लोग जीवित रह सकते है क्या? आतंकवाद का जन्मदाता तो इस्लाम का कुरान ही है। रही बात गलत इन्टरप्रिटेशन की, यह मेरी चुनौती है इसके अतिरिक्त इसका शाब्दिक अर्थ होना सम्भव ही नहीं और न किसी कुरान के भाष्यकार ने किया है, करना सम्भव भी नहीं, अरबी ग्रामरके अनुसार सभी भाष्यकारों ने ठीक-ठीक अर्थ किया है। शायद आप जानती भी नहीं कि सर सैयद अहमद खान ने आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द के प्रभाव से इस प्रकार की आयतों का अर्थ दूसरे ढंग से कराने का प्रयास किया था किन्तु इस्लाम जगत के विद्वानों ने कुरान का भाष्य उनको पूरा करने ही नहीं दिया। 30 पारा में से 18 सिपारा का भाष्य उन्होंने किया था, परन्तु वह भी बाजार में छापने तक ही अनुमति नहीं थी और आज तक वह किसी को भी उपलब्ध नहीं हो पाई है।

आपके विचार से अगर यह अर्थ गलत है तो आप कृपा कर कुरान का भाष्य या शाब्दिक अर्थ पर अपनी टिप्पणी लिखकर छपवा दें तो विश्व में एक सौहार्दपूर्ण वातावरण बने। किन्तु मेरी बहन याद रखना इस्लाम के जन्मकाल से कुरान के आयतों का यही अर्थ है और जब तक धरती पर कुरान है अर्थ यही रहने के कारण विश्व में शान्ति सम्भव नहीं और न इस्लामी आतंकवाद को मिटाना सम्भव है।

प्रमाण 4 – अल्लाजीना आ मनू व हा जेरू वजाहदू फी सबी लिल्लाहे वे अमवा ले हिम व अन फूसे हिम, सुरा तौबा – आ० 20

कुरान – =4= الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا في سبيل الله بأموالهم وأنفسهم - التوبة ٢٠

अर्थ – जो अल्लाह पर ईमान लाते हैं और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते हैं अपनी सम्पदा को खर्च करते है, दीन को फैलाने में घर छोड़ते है वही लोग सफल हैं। जिहाद भी उसी का नाम है जो इस्लाम को फैलाने में, लड़ाई की जावे या इस्लाम के खातिर लड़ी जाती है।

प्रमाण 5 – कातेलुल्लाजीना ला यू मेनूना विंल्लाहे वला बिल याव मिल आखेरे वला यू हर रेमूना मा हर रमल्लाहो व रसूलहू वला यदी नूना दी नल हक्के मिनल्ला जीना उ तुल किताबा, हत्ता यू तुल खिजयता अंईया दिया व हुम सागेरून = तौबा 29

कुरान – =5= قاتلوا الذين لا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر ولا يحرمون ما حرم الله
ورسوله ولا يدينون دين الحق من الذين أوتوا الكتاب حتى يعطوا الجزية
عن يد وهم صاغرون ٥ - التوبة ٢٩

अर्थ – कत्ल करो उनको जो लोग अल्लाह पर ईनाम नहीं लाए, जो कयामत को नहीं मानते, हराम को हराम नहीं मानते, जो रसूल को नहीं मानते, अल्लाह के दीन को नहीं मानते, अल्लाह की किताब को नहीं मानते और जज़िया नहीं देते वह कतल करने योग्य हैं।

अब देखें धरती पर जीने का हक किसको है? कुरान के इस आयत में अल्लाह ने मुसलमानों को साफ कहा कि जो अल्लाह को, रसूल को, कयामत को, इस्लाम जैसे दीन हक को न माने उसे कत्ल कर दो। क्योंकि यह अल्लाह का आदेश है। मेरी प्यारी बहना तवलीन सिंह जी अब आप ही बतायें कि मुसलमान अल्लाह का आदेश मानें या आपका?

अगर आपके आदेश का पालन कोई करे तो उसे आप मात्र धन्यवाद ही तो देंगे? किन्तु याद रखना आपके आदेश का पालन किसी भी मुसलमान के लिए फर्ज नहीं, किन्तु अल्लाह का आदेश प्रत्येक मुसलमान मर्द व औरत का कर्त्तव्य है न मानने पर खतावार, सज़ायाफ्ता होंगे।

एक बात आपको और भी याद रखनी चाहिये आपके आदेश का पालन करें तो मात्र आप अकेले धन्यवाद देंगे और अल्लाह के आदेशानुसार गैर मुस्लिमों को कोई कत्ल करे तो समग्र इस्लाम वाले उसे धन्यवाद ही नहीं आशीर्वाद देगा। अल्लाह भी उसे इनाम के बतौर हूर (सुन्दर स्त्री) गिलमाँ (सुन्दर लौण्डा) पवित्र शराब, परिन्दों के गोश्त का कबाब, शहद, तरह-तरह के मेवे, फल आदि यहां तक कि उसे न थकान होगी, न बुढ़ापा छू सकता है और हमेशा हमेशा के लिए वहीं रहेंगे।

पूज्या बहन जी अब आप ही बतायें क्या आपके पास है वह बखशीश? इसलिए आपसे आग्रह है कि आप कुरान को अच्छी तरीके से पढ़ें, जानकर समझदारी से पढ़े, अगर आप उचित समझें तो मेरी बातों की तहकीकात करें। अगर आप उचित समझें, कहीं मेरी आवश्यकता पड़े, बन्दा आपकी सेवा में हाज़िर है, क्योंकि मैं विगत 24 वर्षों से यही काम कर रहा हूं।

मुसलमानों को अल्लाह का आदेश है कि –

कुरान – إلا تنفروا يعذبكم عذابا أليما ويستبدل قوما غيركم ولا تضروه شيئا
والله على كل شيء قدير - التوبة ٣٩

उच्चारण - इल्ला तन फेरूयु अज्ज़िबा कुम अजाबन अलीमा व यसतबदिल कौमन गैराकुम वला तजुर रूहु शईया वल्लाहोअला कुल्ले शई इन कदीर, सुरा - तौबा - आयत - 39

अर्थ - अगर तुम लोग इस अभियान में शामिल नहीं होते तो अल्लाह तुम्हें कठोर सज़ा देंगे क्योंकि अगर तुम लोग नहीं निकलते तो दूसरे सम्प्रदाय वाले तुम पर हावी हो जायेंगे और जब तुम उनका कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा सकते, अल्लाह सर्वशक्तिमान है।

टिप्पणी - मुसलमानों को कुरान के माध्यम से अल्लाह ने इस प्रकार प्रेरणा देकर गैर मुस्लिमों से युद्ध करने को बाध्य किया है जो ओसामा बिन लादेन तथा तालीबान इसका जीता-जागता प्रमाण आप देख सकते हैं।

कुरान - يٰأيها النبي جاهد الكفار والمنافقين واغلظ عليهم ومأواهم
جهنم وبئس المصير - التوبة ٧٣

उच्चारण - या अईयोहन नवीयो जाहिदुल कुफ्फारा वलमुना फेकीना वगलुज़ अलईहीम वमा वा हुम जहन्नमो व बेसल मसीर, सुरा - तौबा = आयत 73

अर्थ - हे नबी आप जिहाद करो काफिर व मुनाफिकों के विरूद्ध और उनके प्रति आप कठोर हों क्योंकि उनका ठिकाना ही जहन्नुम (नरक) है।

कुरान - ولا تعجبك اموالهم واولادهم انما يريد الله ان يعذبهم
بها في الدنيا وتزهق انفسهم وهم كافرون - التوبة ٨٤-٨٥

उच्चारण - वला तु जिब अमवालाहुम व आवलादाहुम इन्नामा युरीदुल्लाहो अईं यु अज्जिबा हुम बिहाफिद दुनिया व तज़ हका अनफुसा हुम व हुम काफेरून ञ सुरा - तौबा - आयत = 84-85

अर्थ - और इनके मर जाने पर कभी इनके जनाज़े पर मत जाना और न उनके कबर के नजदीक जाना क्योंकि वह तो अल्लाह तथा रसूल को नहीं मानते, वह लोग सत्य से विमुख है, उनके सन्तान सन्तति आपको आकृष्ट न कर सके। अल्लाह उन्हें शास्ति (सजा) देने वाले है।

कुरान - يٰأيها الذين آمنوا قاتلوا الذين يلونكم من الكفار وليجدوا فيكم غلظة
واعلموا ان الله مع المتقين ○ التوبة ١٢٣

उच्चारण - या आइयो हल्लाजीना आ मनू कातेल्लाजीना यलू नकुम मिनल कुफफारे वल यजेदु फी कुम गिल ज़ा तन बआलमु अन्नाल्लाहा मा अल मुत्ताकीन = सुरा - तौबा - आयत 123

अर्थ - ऐ ईमान लाने वालो - कत्ल करो गैर मुस्लिमों को जो तुम्हारे नजदीक है - और तुम्हारे कठोरता को वह लोग देखें और अहसास भी करें क्योंकि अल्लाह ईमानदार मुत्तकी लोगों के साथ है।

कुरान - يايها الذين امنوا قاتلوا الذين يلونكم من الكفار وليجدوا فيكم غلظة
واعلموا ان الله مع المتقين

उच्चारण - फ कातिल फी सबीलिल्लाहे ला तुकल्लाफू इल्ला अनफू सका व हर रेज़िल मोमेनीना असाल्लहो आईयो कफ फा बासाल्लाजीना कफारू - सुरा - निसा - आयत - 84

अर्थ - अल्लाह के रास्ते में जिहाद करो अपने को काबु में रखो अपने मोमीन इस्लाम के मानने वालों को तैयार करो युद्ध के लिए अल्लाह शक्तिशाली पराक्रमी और दण्ड देने में कठोर है।

कुरान - فقاتل في سبيل الله لا تكلف الا نفسك وحرض المؤمنين عسى
الله ان يكف بأس الذين كفروا - النساء ٨٤

उच्चारण - वक तुलू हुम हैसो साकिफ तुमू हुम व अखरेजूहुम मिन हैसो अखरजू कुम वल फितनतो आशद्दामिनल कत्ले वला तुका तिलू हुम इन्दल मसजेदल हराम हत्ता यु का तेलू कुम फी हे - फा इनका तलू कुम फकतुलुहुम कज़ा लिका जज़ा उल काफेरीन = सुरा - बकर - आयत - 111

अर्थ - और जहां पाओ उन्हें कत्ल करो और निकालो उन्हें वहां से जहां से तुम्हें निकालें, दंगा करना, कत्ल से अच्छा नहीं और कावा के पास न लड़ना। जब तक वह तुम्हारे साथ न लड़ें और अगर वह लड़ने को तैयार हों तो उन्हें कत्ल करना, क्योंकि काफिरों की सज़ा यही है

कुरान - واقتلوهم حيث ثقفتموهم واخرجوهم من حيث اخرجوكم
والفتنة اشد من القتل ولا تقاتلوهم عند المسجد الحرام حتى يقاتلوكم فيه
البقرة ١٩١

उच्चारण - वकातेलु हम हत्ता लातकूना फितना तुईं व या कूनाद्दीनो लिल्लाहे - बकार - 193

अर्थ - और कत्ल करो उन लोगों को जब तक अल्लाह का दीन चारों ओर न फैले जब तक विश्व में एक अल्लाह का धर्म इस्लाम न हो जाए।

कुरान - وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين لله ٥ البقرة ١٩٣

उच्चारण - मन काना अदूवल लिल्लाहे व मला इकातेही व रसूलेही व जिबरीला व मीकाला फ इन्नाल्ला हा अदू उल्लि काफेरीन, सुरा - बकर - आयत - 98

कुरान - من كان عدوا لله وملائكته ورسله وجبريل وميكال فان الله عدو للكافرين - البقرة

-उच्चारण - या आइयो हल्लाजीना आ मनू कातेल्लाजीना यलू नकुम मिनल कुफफारे वल यजेदु फी कुम गिल ज़ा तन बआलमु अन्नाल्लाहा मा अल मुत्ताकीन = सुरा - तौबा - आयत 123

अर्थ - ऐ ईमान लाने वालो - कत्ल करो गैर मुस्लिमों को जो तुम्हारे नजदीक है - और तुम्हारे कठोरता को वह लोग देखें और अहसास भी करें क्योंकि अल्लाह ईमानदार मुत्तकी लोगों के साथ है।

उच्चारण - फ कातिल फी सबीलिल्लाहे ला तुकल्लाफू इल्ला अनफू सका व हर रेज़िल मोमेनीना असाल्लहो आईयो कफ फा बासाल्लाजीना कफारू - सुरा - निसा - आयत - 84

अर्थ - अल्लाह के रास्ते में जिहाद करो अपने को काबु में रखो अपने मोमीन इस्लाम के मानने वालों को तैयार करो युद्ध के लिए अल्लाह शक्तिशाली पराक्रमी और दण्ड देने में कठोर है।

उच्चारण - वक तुलू हुम हैसो साकिफ तुमू हुम व अखरेजूहुम मिन हैसो अखरजू कुम वल फितनतो आशद्दामिनल कत्ले वला तुका तिलू हुम इन्दल मसजेदल हराम हत्ता यु का तेलू कुम फी हे - फा इनका तलू कुम फकतुलुहुम कज़ा लिका जज़ा उल काफेरीन = सुरा - बकर - आयत - 111

अर्थ - और जहां पाओ उन्हें कत्ल करो और निकालो उन्हें वहां से जहां से तुम्हें निकालें, दंगा करना, कत्ल से अच्छा नहीं और कावा के पास न लड़ना। जब तक वह तुम्हारे साथ न लड़ें और अगर वह लड़ने को तैयार हों तो उन्हें कत्ल करना, क्योंकि काफिरों की सज़ा यही है।

उच्चारण - वकातेलु हम हत्ता लातकूना फितना तुईं व या कून्नाद्दीनो लिल्लाहे - बकार - 193

अर्थ - और कत्ल करो उन लोगों को जब तक अल्लाह का दीन चारों ओर न फैले जब तक विश्व में एक अल्लाह का धर्म इस्लाम न हो जाए।

उच्चारण - मन काना अदूवल लिल्लाहे व मला इकातेही व रसूलेही व जिबरीला व मीकाला फ इन्नाल्ला हा अदू उल्लि काफेरीन, सुरा - बकर - आयत - 98

अर्थ - जो लोग अल्लाह के फरिश्तों का रसुलों का - जिवरील और मीकाईल का शत्रु है, वह अल्लाह के भी शत्रु है और वही लोग काफिर हैं।

कुरान में यहां 'काफिर' की परिभाषा को स्पष्ट किया है कि - 'काफिर वह है जो अल्लाह को नहीं मानते तथा अल्लाह के फरिश्तों को नहीं मानते पैगम्बरों को नहीं मानते, जिबराईल व मीकाईल को नहीं मानते वह काफिर है।' अर्थात् मात्र अल्लाह को न मानने वाला ही काफिर नहीं है।

कुरान में 30 सिपारा है। 114 सूरते हैं - 6666 आयते है और इन आयतों में एक हजार से भी ज्यादा आयते है जो इस्लाम के न मानने वाले है उनको मारो-काटो-लूटो-पीटो की बात हैं। बहुत संक्षेप में कुछ प्रमाण प्रस्तुत किया है। इन सभी बातो को हर मुसलमान भी नहीं जानते - तो गैर मुस्लिमों की जानकारी की गुंजाईश ही कहां है। आज सही समय पे हम लोग खड़े हैं। समय की नफ़ज़ को अगर सही पकड़ कर काम किया जाये और सेमेटिक इस्लाम को या इस्लाम के इन कट्टरवादी विचारों को अगर जन-जन तक पहुंचा दिया जाये तो मानव मात्र का कल्याण चाहते हुये - आतंकवादी इस्लाम को जड़मूल से नष्ट किया जा सकता है।

इस्लाम में जेहाद का अर्थ मात्र लड़ाई नहीं है अपितु गैर इस्लामियों के साथ लड़ना ही जेहाद कहलाता है। इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद स. ने अपने जीवन काल में नेक लड़ाईयां लड़ीं और यहां तक कि एक लड़ाई में अपने दांत भी तुड़वा लिये। अपने सगे सम्बन्धी जिन्होंने कि इस्लाम को स्वीकार नहीं किया उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया।

आश्चर्य की बात तो यह है कि यह सभी कार्य धर्म और ईश्वरके नाम से हुआ और आज भी हो रहा है। यही कारण बना कोई भी मुसलमान ओसामा बिन लादेन को तथा तालीबानों को आतंकवादी नहीं कह रहे है - वह तो इस्लाम को फैलाने हेतु लड़ रहा है इस्लाम विरोधियों से लड़ रहा है। इसलिए वह इस्लाम का जिहादी है - जो अफगानिस्तान तथा पाकिस्तानी नागरिक उसे हीरो कह रहे है और लादेन हो या कोई भी मुसलमान गैर मुस्लिमों के हाथ मारा जाता है वह मरा नहीं इस्लाम में उसे ही शहीद कहते हैं।

अब तक दर्शाये गये सभी प्रमाण कुरान के है। अब कुछ हदीस से प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं। हदीस मुहम्मद ने जो किया व कहा मूल रूप से हदीस 6 हैं। 1. सहीह बुखारी, 2. शाही मुस्लिम, 3. मिशकात, 4. तिरमीजी, 5. अबु दाऊद तथा 6. इब्ने माजा = बुखारी को सबसे बड़ा व प्रमाणित माना जाता है तथा उक्त हदीस में एक अध्याय है किताबुल जिहाद के नाम से अर्थात् जिहाद के प्रकरण में कुछ प्रमाण दे

कुरान - قال قال عبد الله بن مسعود سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم
أي العمل أفضل قال الصلوة على ميقاتها قلت ثم أي قال ثم بر الوالدين
قلت ثم أي قال الجهاد في سبيل الله فسكت عن رسول الله صلى الله
عليه وسلم

उच्चारण - काला काला अब्दुल्ला इब्ने मसयूदिन सा अलतोरसु लिल्लाहे सल्लाल्लहो अलई हे व सल्ला मा अईयुल अमाले अफज़लो कालस्सालातो अला मीका तिहा - कुलतो सुम्मा अईयुन - काला सुम्मा बिररूल वाले दाइने - कुलतो सुम्मा अईयुन-कालल जिहादी फी सबील्लिाहे फ सकत्तो अररसुलिल्लाहे सल्लाल्लाहो अलई हे व - सल्लामा, बुखारी - बाब नं. 46, हदीस नं. 51

अर्थ - कहा अब्दुल्ला इब्ने मसयूद ने एक बार हजरत मुहम्मद रसूल से पूछा कि हमारे लिये अच्छा काम क्या है? तो कहा - समय पर नमाज़ पढ़ना - फिर पूछा इससे अच्छा काम क्या है? तो रसूल ने कहा - माता-पिता की सेवा करना - फिर तीसरी बार पूछा कि इससे भी कोई और अच्छा काम है? जवाब मिला कि सबसे अच्छा काम है अल्लाह के रास्ते में जेहाद करना, इससे बढ़कर कोई अच्छा काम और अल्लाह के नजदीक नहीं है।

इस प्रकार से कुरान तथा हदीसों में अनेक बार मुसलमानों को अल्लाह का दीन फैलाने हेतु प्रेरणा दी गई। अगर जेहाद के लिए बुलाया जाये तो फौरन घर से निकल जाना चाहिये, घर की औरतों को भी उसमें शामिल होना चाहिए। उस जेहाद में जो घोड़ा इस्तेमाल किया गया वह घोड़ा भी लड़ते लड़ते मर गया हो - उसे भी शहीद का दर्जा दिया गया है। हदीस में कहा गया कि -

درجات المجاهدين في سبيل الله يقال هذه سبيلي و هذا سبيلي

उच्चारण - दराजतिलमुजाहेदीना फी सबी लिल्लाहे

अर्थ - मर्यादा मुजाहेदीन अल्लाह के रास्ते में जेहाद करना इससे बढ़कर और कोई मर्यादा अल्लाह के पास नहीं है। यहां भी शब्द मुजाहेद्दीन कहा गया अर्थात् इस्लाम में गैर मुस्लिमों के साथ जो लड़े उसे ही मुजाहेद्दीन कहा जाता है यानी दीन इस्लाम को विस्तार करने हेतु जो जेहाद करे।

अब तक के प्रमाण से मैंने यह सिद्ध किया कि इस्लाम के खातिर जो लड़े वह आतंकवादी नहीं अपितु वह मुजाहेद्दीन है इसलिए आतंकवाद को इस्लाम से अलग नहीं करना चाहिये। अर्थात् इस्लाम ही आतंकवाद है और आतंकवाद ही इस्लाम।

अभी कुछ दिन पहले पाकिस्तानी राष्ट्रपति अमेरीका को सहयोग देने के बयान में तालीबान तथा पाकिस्तानी आलिमों ने फतवा जारी किया कि यह इस्लाम के साथ बगावत है।

यहां तक कि हिन्दू बाहुल्य भारत के जामा मस्जिद के इमाम अहमद बुखारी ने पिछले दिन भारत के प्रधानमंत्री को चेतावनी दी कि भारत अगर अपनी जमीन अफगान के तालीबानों के खिलाफ अमरीका को इस्तेमाल करने दिया तो परिणाम - हम भारत के मुसलमान आन्दोलन करेंगे। यह है इस्लामिक शिक्षा।

पं. महेन्द्र पाल आर्य

दिनांक - 13/07/2005

लेखक का संक्षिप्त परिचय :

श्री महेन्द्र पाल का जन्म 19 सितम्बर 1951 में कलकत्ता के एक जाने–माने इस्लामिक विद्वान श्री मुजफ्फर अली के घर हुआ । आपने 1964 में हिफज फिर आलिम करके दिल्ली में मदरसा अमिनिया इस्लामिया से 1972 में फरागत हासिल की। उसके उपरान्त गांवों व शहरों मे इस्लाम का प्रचार किया। सन् 1980 में बरवाला, जिला बागपत (उ.प्र.) की बडी मस्जिद में इमाम बनें।

इन्ही दिनों इनका सम्पर्क अध्यापक श्री कृष्णपाल जी के माध्यम से स्वामी शक्तिवेश से हुआ। तदउपरान्त 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़कर इनके मन में मानव उत्थान के लिये अनेक प्रश्न उठे जिसके निवारण के लिये इन्होंने विभिन्न मुस्लिम विद्वानों व इस्लामिक संस्थानों को लिखा । परन्तु सभी जगह से इन्हें कोई सन्तोष जनक उत्तर नहीं मिला। उल्टा इन्हीं को 'दीन से भटक गये' आदि कहकर रोष प्रकट किया।

अन्त में सभी जगहों से निराश होकर स्वयं ही दृढ़ निश्चय के साथ घर वापसी करते हुए सन् 1983 में वैदिक धर्म को अपनाया और महबूब अली से महेन्द्र पाल आर्य बन गये। तभी से निरन्तर वैदिक धर्म की सेवा करते हुए जन कल्याण के कार्यो के लिये सदैव तत्पर रहते हैं।

पता : पं0 महेन्द्र पाल आर्य
(पूर्व मौलवी महबूब अली)
आर्य समाज
आर्य नगर, पहाडगंज, नई दिल्ली
मो0 : 9810797056

हिन्दू समाज में से एक मुस्लिम या ईसाई बने, इसका मतलब यह नहीं कि एक हिन्दू कम हुआ बल्कि हिन्दू समाज का एक दुश्मन और बढ़ा।

स्वामी विवेकानन्द